RAJYA SABHA

Tuesday, the 15th December, 1964/the 24th Agrahayana, 1886 (Saka)

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

ब्रिटिश टेलीविजन पर भारत की तस्वीर का विकृत रूप में पेश किया जाना

*५८१. **श्री ए० बी० वाजपेयी**: क्या **वैदेशिक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या सरकार का ध्यान ब्रिटिश टेलीविजन पर भारत की तस्वीर को विकृत रूप (यथा देश में भुखमरी इत्यादि) में पेश किये जाने की ओर दिलाया गया है ; यदि हां, तो क्या इस संबंध मे लंदन स्थित भारतीय हाई कमिश्नर से विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई है ?

†[DEPICTION OF INDIA'S IMAGE ON BRITISH TV IN DISTORTED MANNER

*581. SHRI A. B. VAJPAYEE: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state whether Government's attention has been drawn to depiction of India's image on the British television in a distorted manner (like starvation in the country etc.); and if so, whether detailed information in this regard has been obtained from the office of the Indian High Commissioner in London?]

वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह) : सरकार को ऐसी किसी खास घटना का पता नहीं है। इसके विपरीत, लंदन स्थित हमारे उप-हाई कमिश्नर ने सितम्बर में यूनाइटेड किंगडम के एक टेलीविजन प्रसारण पर बोलते हुए खाद्यान्न संकट के संबंध मे भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से समझाया था और कहा था कि भुखमरी कहीं नहीं है, हां—थोड़े समय के लिए खाने-पीने की चीजों का अभाव अवश्य हो गया है।

†[THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DINESH SINGH): The Government is not aware of any such incident. On the contrary, our Deputy High Commissioner in London appeared on one of the television systems in U.K. in September and explained India's viewpoint on food crisis very clearly indicating that there was no starvation though there was a temporary food shortage.]

श्री ए० बी० वाजपेयी : सभापति जी, जो उत्तर दिया गया है उसे सुन करके मुझे आश्चर्य हुआ है कि जब मैं और संसद के कुछ सदस्य लंदन मे थे तो हमने ब्रिटिश टेलीविजन पर भारत के कार्यक्रम देखे, जिन मे भारत की तस्वीर को गलत ढंग से पेश किया गया था। एक कार्यक्रम बनारस में भुखमरी के बारे मे था, जहां भूखे लोगो को मुट्ठी मुट्ठी भर अनाज बांटा जा रहा है और उसके साथ जो कमेंट्री की गई, उससे पता लगता था कि लोग भूखे मर रहे हैं, सड़को पर लोग मरे पड़े हुये है और उन्हें उठाने वाला कोई नहीं है। दूसरा कार्यक्रम एक ऐसी हिन्दू विधवा के जीवन की तस्वीर थी, जिसे पहले विधवा होते हुये दिखाया गया था, हाथों की चूड़िया टूटी हुई थी, मांग का सिंदूर पोछा हुआ था, और थोड़ी देर बाद उस विधवा को किसी आदमी से प्रेम करते दिखाया गया था। ये चीजें हमने हाई कमिश्नर के सामने रखी। मुझे ताज्जुब है कि जो चीजें हम देख कर के आये है, उनसे सरकार कैसे इन्कार कर सकती है ?

श्री दिनेश सिंह : सरकार के इन्कार करने का सवाल नहीं है। हम वहां पर एक

† [ ] English translation.

टेलीविज़न और रेडियो की मानिटरिंग सर्विस से ये खबरे लेते हैं कि हिन्दुस्तान के बारे मे कुछ हो, तो वह हमको बता दें। जो माननीय सदस्य ने कहा है, उसका हाई कमिश्नर ने हमसे कोई ज़िक्र नही किया। हमने उनसे यह सवाल आने के बाद पूछा भी था। भखमरी के सम्बन्ध मे यह बात है कि भारत की जो वे तस्वीर देते है, उसमे अक्सर भिखमंगो की तस्वीरे होती है क्योकि यहा पर अक्सर लोग उनकी तस्वीरे खीच लेते है। लेकिन खास हमारे खिलाफ कुछ हो, ऐसा उसमे नही आया।

श्री ए० बी० वाजपेयी : क्या मंत्री महोदय को यह पता है कि ब्रिटिश टेलीविजन पर हर हफ्ते एक ऐसा कार्यक्रम होता है जिसमे भारत को बदनाम करने को कोशिश की जाती है। ब्रिटिश टेलीविज़न ब्रिटिश सरकार का हिस्सा है और उसको कोई प्राइवेट कम्पनी नही चलाती है। तो क्या कमिश्नर से कहा गया है कि इस प्रकार के होने वाले प्रचार पर वे अपनी नजर रखे और क्या अभी तक किसी भी गलत प्रचार के खिलाफ सरकार ने विरोध पत्र भेजा है ?

श्री दिनेश सिंह : सभापति महोदय, ब्रिटिश टेलीविज़न, जो अभी माननीय सदस्य ने कहा, बी०बी०सी० का एक टेलीविजन है। इसके अलावा वहां पर एक फ्री टेलीविजन भी है। लेकिन हिन्दुस्तान के बारे मे जो वहा टेलीविज़न पर दिखाया जाता है, उसके सम्बन्ध मे हम पूरी कोशिश करते है कि अगर कोई चीज़ गलत हो तो उसको बाद मे ठीक करे। बीच-बीच मे हमारी मेहनत से या हमारे कहने से जब उनको कोई ऐसी सामग्री मिलती है तो उसको ठीक कर के भी वे टेलीविज़न पर दिखाते हैं। लेकिन जैसी कि हमारे यहा भी प्रेस है और कभी कोई चीज़ हमारे माफिक भी होती है और कभी खिलाफ भी होती है, पर रोज़-रोज़ हम उसके पीछे नही पड सकते हैं, उसी तरह से वहां की प्रेस भी आजाद है। लेकिन जो कुछ हम को कहना होता है वह हम कहते है।

MR CHAIRMAN: Are you sure that it is not a weekly feature? The Member has made the point that there is a weekly feature

SHRI A. B. VAJPAYEE: Sir, he is not sure of anything.

SHRI DINESH SINGH: There is a weekly feature but not against us in that way.

श्री ए० बी० वाजपेयी : सभापति महोदय, मै यह जानना चाहता हू कि विदेशो की जो टेलीविजन कम्पनिया आती है और भारत मे तस्वीरे लेती है, क्या वे यहा आने से पहले और तस्वीरे लेने से पहले सरकार की इजाजत लेती है और क्या सरकार इस बात की जाच करती है कि वे किस तरह की तस्वीरे ले रही है ? अगर यह बात सच है, तो बनारस मे ब्रिटिश टेलीविज़न कम्पनी ने जिस तरह की तस्वीरे ली, उस तरह की तस्वीरें उसे क्यो लेने दी गई ?

श्री दिनेश सिंह : जब कोई टेलीविज़न यहा बनाने आते है, तो हमसे इज़ाजत लेते हैं और तस्वीरे भी दिखाते है। लेकिन हर मर्तबा यहा टेलीविजन की तस्वीरे दिखाना ज़रूरी नही है। कोई भी किसी तस्वीर को अपने कैमरे मे खीच सकता है और वह टेलीविजन पर दिखा सकता है।

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या सरकार का कुछ विचार है कि जो श्री वाजपेयी ने बातें यहा पर कही, उन पर हाई कमिश्नर का ध्यान दिलाया जाय और उनसे पूछा जावे कि ये बातें उन्होने पहले क्यो नही बताई ?

श्री दिनेश सिंह : जरूर पूछा जायगा, अगर माननीय सदस्य उसका विवरण मुझे दे दें।

श्री ए० बी० वाजपेयी: सभापति जी, ये बातें मैंने हाई कमिश्नर से खुद कही और उन्होंने इन बातों से इन्कार नहीं किया। उलटे उन्होंने यह कहा कि हमने अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकाल दिया और स्वेज के मामले में हमने उनका विरोध किया, तो फिर यदि ऐसी बातें हों तो इसमें आश्चर्य क्या है। जब हमारे हाई कमिश्नर इस तरह का जवाब दें, तो मैं नहीं समझता कि सरकार इसके औचित्य का समर्थन कैसे कर सकती है?

(No reply.)

SHRI FARIDUL HAQ ANSARI: Sir, now that the question has been raised here on the floor of the House, may I know whether the Government of India will take up the matter with the British Government and protest strongly against this distortion of the conditions prevailing here?

SHRI DINESH SINGH: As I mentioned in Hindi just now, if the hon. Member kindly gives me the details, we shall certainly look into the matter.

SHRI FARIDUL HAQ ANSARI: He has already given you the details, Sir.

SHRI A. D. MANI: Sir, the hon. Minister stated just now that the Indian High Commission does get the opportunity of putting up its view point on TV. May I know on how many occasions during the last six months the Indian High Commission was given such an opportunity of presenting the Indian point of view?

SHRI DINESH SINGH: I did not say the Indian High Commission gets an opportunity in the sense that they allot time to us to present the TV as we like. We only said that we help the TV people to produce films projecting the correct picture of India.

SHRI M. P. BHARGAVA: May I know from the hon. Minister whether any specific duty has been assigned to any persons in the High Commission to keep a watch on whatever is broadcast or whatever is shown on TV for India and make a complaint against such things as they think are ojectionable?

SHRI DINESH SINGH: Sir, I mentioned just now that we subscribe to a monitoring service which gives us the transcript of radio and TV broadcasts for or against India, and that is examined in the Press Relations Branch of the High Commission. They occasionally send it to us. But I would like to draw the attention of the House that radio, TV and broadcasting, they are all difficult media to control in that sense, as in our country have got a press which is free, not always very friendly to us, but we cannot always run after anything that is produced. We can only try to put it right in a positive manner by presenting a correct picture.

SHRI P. RAMAMURTI: Will the hon. Minister try to see that somebody in the High Commissioner's office is specifically assigned the task of actually watching these TV shows day after day—this is a specific task —not just depending upon some monitoring service but actually looking at these TV broadcasts everyday? Whenever such things come to their notice, they should take up the matter with the British Government.

SHRI DINESH SINGH: I am sure it will be a welcome duty for anyone, but the difficulty is that there are many channels through which TV broadcasts come and for one person to see all the TV broadcasts will be rather difficult.

MR. CHAIRMAN: Next question.

गार्डन रीच वर्कशाप्स लिमिटेड में फैब्रीकेशन के काम में नुकसान

*५८२. **श्री भगवत नारायण भार्गव**: क्या **प्रतिरक्षा** मंत्री सैंट्रल गवर्नमेंट आडिट रिपोर्ट (कमर्शियल), १९६४ के पृष्ठ ८१ को देखेंगे जिसमें यह बताया गया है कि दो